Subject :- Sociology Date:- 04/07/2020
Class :- 12th
Topic :- राष्ट्रवाद तथा उपनिवेशवाद
By :- Dr. Shyamanand Choudhary
Guest Teacher, Marwari college, Darbhanga

राष्ट्रवाद Online Study Material No:- (100)

राष्ट्रवाद (Nationalism) को परिभाषित करते हुए कहा जा सकता है कि "राष्ट्रवाद चिन्तन की एक ऐसी दशा है जिसमें व्यक्ति अपने धर्म, जाति या क्षेत्र की भावनाओं से ऊपर उठकर राष्ट्र के प्रति सर्वोच्च निष्ठा रखते हैं।"

किसी राष्ट्र से सम्बन्धित लोगों की सांस्कृतिक विशेषताओं तथा रहन-सहन के स्तर में चाहे कितनी भी भिन्नता हो, लेकिन यदि वे इस बारे में जागरूक हों कि उनका अस्तित्व उनके राष्ट्र से जुड़ा हुआ है तो इसी भावना को हम राष्ट्रवाद कहते हैं। राष्ट्रवाद से लोगों की यह भावना दृढ़ बनती है कि राष्ट्र की समस्या उनकी अपनी समस्या है तथा एक दूसरे का साथ देकर ही राष्ट्र को मजबूत बनाया जा सकता है। इसका तात्पर्य है कि राष्ट्रवाद ही वह आधार है, जो किसी राष्ट्र को संगठित बनाता है। इस दृष्टिकोण से प्रोफेसर जिमर्न (Zimmern) ने लिखा है, "राष्ट्रवाद अथवा राष्ट्रीयता एक मानसिक दशा है। यह अनुभव करने, विचार करने और जीवन व्यतीत करने का एक ऐसा ढंग है जिसका सन्दर्भ राष्ट्र होता है।" इस कथन से भी यही स्पष्ट होता है कि जब एक राष्ट्र से सम्बन्धित सभी व्यक्ति और समूह मानसिक रूप से इस तरह संयुक्त हो जाते हैं कि वे व्यक्तिगत हितों की तुलना में राष्ट्रीय हितों को अधिक महत्व देने लगते हैं, तब इसी दशा को हम राष्ट्रवाद कहते हैं।

राजनीतिशास्त्रियों ने राष्ट्रवाद के दो मुख्य रूपों का उल्लेख किया है। इन्हे हम पश्चिमी राष्ट्रवाद तथा पूर्वी राष्ट्रवाद कहते हैं। पश्चिमी राष्ट्रवाद वह है जो यूरोप के विकसित देशों में देखने को मिलता है। यह राष्ट्रवाद यूरोप के नवजागरण, प्रौद्योगिक विकास तथा वैयक्तिक स्वतंत्रता से सम्बन्धित मूल्यों पर आधारित है। पूर्वी राष्ट्रवाद का सम्बन्ध एशिया और अफ्रिका के उन देशों से है जिन्होने यूरोप के साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद के विरुद्ध संगठित होकर स्वतंत्रता की लड़ाई आरंभ की। इन देशों में राष्ट्रवाद का उदय एक सामान्य राजनीतिक चेतना और देशभक्ति की भावना के कारण हुआ। भारत में भी राष्ट्रवाद का आरंभ यहाँ राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान हुआ। अनेक समाजशास्त्री यह मानते हैं कि भारत के राष्ट्रवाद का उदय इंग्लैण्ड

Scanned with CamScanner

के साम्राज्यवाद से प्रभावित होने के कारण इसका रूप स्वतंत्रता आन्दोलन के समय अधिक स्पष्ट रहा, लेकिन अनेक आन्तरिक विभेदों और बाहरी शक्तियों के कारण स्वतंत्रता के बाद इसका रूप कमजोर पड़ने लगा।

उपनिवेशवाद

एक देश के द्वारा दूसरे देश पर शासन को उपनिवेशवाद कहा जाता है। उपनिवेशवाद का अर्थ किसी साम्राज्यवादी देश द्वारा किसी अन्य देश पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर उसे पराधीन बनाना है। 16 वीं शताब्दी में एशिया, अफ्रिका तथा अमेरिकी उपमहाद्वीप पर साम्राज्यवादी नियंत्रण स्थापित करने तथा उनको उपनिवेश बनाने का पहला चरण प्रारंभ हुआ। 16 वीं तथा 18 वीं शताब्दी के बीच के काल में यूरोपीयों द्वारा भौगोलिक खोजों के बाद पुर्तगाल, स्पेन, इंग्लैण्ड में बड़े-बड़े औपनिवेशिक साम्राज्य स्थापित किए। यूरोप के इन देशों के अनेक लोग स्थायी रूप से रहने के लिए इन उपनिवेशों में चले गये। 16 वीं से 18 वीं शताब्दी तक का काल यूरोपीय उपनिवेशवादी शक्तियों द्वारा खुली लूट का काल था।

S. N. Choudhary
Guest Teacher, Marwari college
Darbhanga

Scanned with CamScanner